मर्दों वाली बातें

मर्द, मर्दानगी और SRHR पर एक शोध

the yp foundation
INTERSECTIONAL | FEMINIST | RIGHTS-BASED

AMERICAN JEWISH WORLD SERVICE

कार्यकारी सारांश

प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य (RCH) विषय पर 'पुरुषों की भागीदारी' को प्रमुख कार्ययोजना बनाने के बाद से ही पुरुषों के साथ या उनके बीच किए जा रहे कार्यक्रमों की रूपरेखा में बहुत अधिक बदलाव आया है। इससे पहले जेंडर आधारित हिंसा पर कार्यक्रमों के अंतर्गत पुरुषों को हिंसा करने वाले प्रमुख वर्ग के रूप में ही देखा जाता था, और इन कार्यक्रमों में केवल महिलाओं के साथ काम करने पर ध्यान दिया जा रहा था। रणनीति में इस प्रमुख बदलाव के बाद से, जेंडर आधारित हिंसा को कम करने और महिलाओं की यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य व अधिकारों (SRHR) तक पहुँच को बढ़ाने में पुरुषों को भी सहयोगी माना जाने लगा है और इस कार्य में पुरुषों की भागीदारी उत्तरोत्तर बढ़ी । लेकिन यह भी सही है कि इन कार्यक्रमों में, पुरुषों की एक रक्षक और बचावकर्ता की छवि को बढ़ावा मिला है ।

पुरुषों के बीच पितृसत्तात्मक सोच और मूल्यों पर सवाल खड़े कर पाना या इनके बारे में अधिक सोच-विचार कर पाना अभी भी कठिन ही बना हुआ है। इन सभी कठिनाईओं को देखते हुए ही, पुरुषों के साथ कार्यक्रम चलाने के तरीकों में अब मर्दानगी से जुड़े भावों अर्थात पुरुषों की सोच, विचारों और व्यवहार पर भी ध्यान दिया जाने लगा है। मर्दानगी के अनेक तरह की अभिव्यक्ति पर ध्यान देने वाले कार्यक्रमों का लाभ यह हुआ है कि अब हम पितृसत्ता को एक व्यवस्था के रूप में पहचान सकते हैं जो हमारे समाज को अलग-अलग स्तरों पर विभक्त कर देती है, और जिसके कारण अलग-अलग जेंडर में कार्यक्रमों के परिणाम अलग होते हैं।

यौन एवं प्रजनन स्वास्थ्य व अधिकारों (SRHR) में बदलाव लाने के लिए यह ज़रूरी है कि समाज को स्तरों पर विभक्त करने या इस के प्रभाव को बढ़ाने वाली उन पहचानो को भी जाना जाये जो जेंडर के साथ मिलकर इस प्रभाव को बढ़ाने का काम करती हैं।

अंतरभागिता अपनाने वाली लगभग सभी कार्ययोजनाओं में अधिकारों को पाने के परिप्रेक्ष्य में जेंडर की अनेक पहचानो को शामिल करने पर ज़ोर दिया जाता रहा है। ऐसी कार्ययोजनाओं के लिए जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से ही इस शोध में यह सवाल उठाया जा रहा है कि –

उत्तर प्रदेश में कॉलेज में पढ़ने वाले युवा लड़कों के मन में मर्दानगी का भाव कैसे निर्मित और अभिव्यक्त होते हैं?

इस शोध से मिली व्यापक जानकारी उन कार्यक्रमों को और सूचित कर सकती है जो मर्दानगी और विभिन्न मुद्दों पर पुरुषों को शामिल करना चाहते हैं। इस शोध ने निम्नलिखित उद्देश्यों को संबोधित करा है:

- जेंडर, यौनिकता, जाति, वर्ग और धर्म की अंतरभागिता पर विचार करना
- आज के सोशल मीडिया (विशेषकर फेसबुक और व्हाट्सऐप) के प्रभाव को समझना
- दोस्ती, प्रेम, विवाह और धोखे आदि के बारे में पुरुषों के विचारों को समझना
- सम्बन्धों में सहमति, यौन स्वास्थ्य, गर्भनिरोध और हिंसा के बारे में पुरुषों के विचार जानना

इन उद्देश्यों के साथ उत्तर प्रदेश में लखनऊ, बनारस और अलीगढ़ में इस शोध को किया गया । गुणात्मक प्रक्रियाएँ अपनाते हुए 18-26 वर्ष आयु के 80 से अधिक पुरुषों के साथ बातचीत की गयी ।

“मर्दानगी हर चीज से जुड़ा है, यह खतरा, जो हमें पुरुष होने के लिए उकसाता है ...” (यह) घर से ही शुरू होता है ... जब से हम पैदा होते हैं, हमें बताया जाता है कि पुरुषों को दर्द नहीं होता है, पुरुषों को लड़कियों की तरह रोना नहीं चाहिए, पुरुषों को लड़कियों से ज्यादा खाना चाहिए, लड़कियों की तुलना में पुरुष ज्यादा बाहर जाते हैं... हमारा परिवार इसमें एक बड़ी भूमिका निभाता है... और यह हमेशा हमें बताता है कि समाज की नज़र में सफल होने के लिए हमें एक तरह का आदमी बनने की ज़रूरत है।”

कार्यकारी सारांश

ing from Antonio Grams
e cultural dynamic by whi
osition in social life. At a
er than others is cult
be defined as the c
bodies the curren
timacy of patria
the dominant p
15
s of hegemo
They may
es, such
power
n in th
nt busin
social sce
n and the prot
nate of political and pol
be established only if the
ural ideal and institutio
the top levels of busin
a fairly convincing corpo
aken by feminist women
m to authorit more th
remony (tho gh violen
ies)
embodies 'curren
e defence patriarc
particular masculin
d solutions and c
f any group of m
men, is a historica
ment of the pictu

हेजेमोनिक मैस्क्युलिनिटी

मर्दानगी में पदानुक्रम, खतरे और प्रतियोगिताएँ

- मर्दानगी में विभिन्न स्तरों की स्पर्धा में भी कभी पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती नहीं दी जाती। उत्तरदाताओं से मिली जानकारी से ऐसा लगा कि मर्दानगी की विभिन्न अभिव्यक्तिओं से भी पितृसत्ता सशक्त होती है फिर चाहे वो समाज में सबसे प्रभावी आदर्श ना भी हो । जनसाधारण के विचारों में जिन भावों की आलोचना व अवहेलना होती हो (जैसे मुस्लिम पुरुष) और वे प्रचलित प्रधान भाव के करीब भी बिलकुल न हों, फिर भी वे पितृसत्ता के कारण होने वाले दमन को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

- शोध के दौरान पुरूषों के विचार जानकार ऐसा प्रतीत हुआ कि मर्दानगी के भाव के सकारात्मक

- प्रभाव होने की बजाए, इन पुरूषों बहुत अधिक भावनात्मक दबाब बना हुआ था।

- उत्तरदाताओं से पता चला कि लोग समाज में अपनी स्थिति/ अपने आत्मसमान को सेक्स के दौरान प्रदर्शन से जोड़ कर देखते थे। उन्हें लगता था कि यौन साथी को अगर वे संतुष्ट नहीं कर पाते तो इसका उनके सम्बन्धों पर बुरा असर होगा और फिर अपने साथियों और खुद अपनी नज़रों में नीचे गिर जाएँगे।

- मर्दानगी में हर स्तर पर जाति और जेंडर के बीच एक गहरा संबंध दिखाई दिया। पुरुषों में मर्दानगी की अभिव्यक्ति पर जाति के प्रभाव का पता कुछ विशेष जाति के पुरुषों (ठाकुरों, पठानों और जाटों) की शारीरिक भंगिमाओं, उनके चलने के तरीके से साफ झलकता है।

- धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों के उत्तरदाताओं नें यह बताया कि वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिवेश में उन्हे अपनी खुद की स्थिति को लेकर चिंता होती है और एक तरह से डर का सामना करना पड़ता है। अनेक उत्तरदाता धर्म के आधार पर अपनी मर्दानगी को व्यक्त करने में बहुत ज़्यादा विश्वास रखते हैं। ऐसा भी संभव है कि इसके कारण ही वे अपने धर्म में बताई गयी असमानताओं को सही मानने लगे हों। अपनी सामाजिक स्थिति को और अधिक मजबूत करने के लिए ही बहुत से लोग मर्दानगी का विरोध करते भी दिखाई पड़ते हैं।

- किसी स्थान विशेष पर मौजूदगी और मर्दानगी के बीच भी संबंध दिखाई पड़ते हैं – सबसे पहले तो अनेक मान्यताओं के कारण अनेक स्थानों को मर्दाना और दूसरों को स्त्रीत्व भाव में देखा जाने लगता है (जैसे कि घर में रहने को या फिर घर में भी रसोई में रहने को स्त्रीत्व गुण समझा जाता है) और इसके चलते कहीं आने-जाने की स्वतन्त्रता पर पितृसत्ता का आधिपत्य या कब्जा बहाल रहता है; दूसरे किसी स्थान पर रहना कितना मर्दाना या कितना जनाना, इस बारे में मान्यताएँ और विचार इस आधार पर मजबूत होते हैं कि इन स्थानों पर होने को लोग किस तरह से लेते हैं और उनके मन में इसके कारण किस तरह के विचार पनपते है।

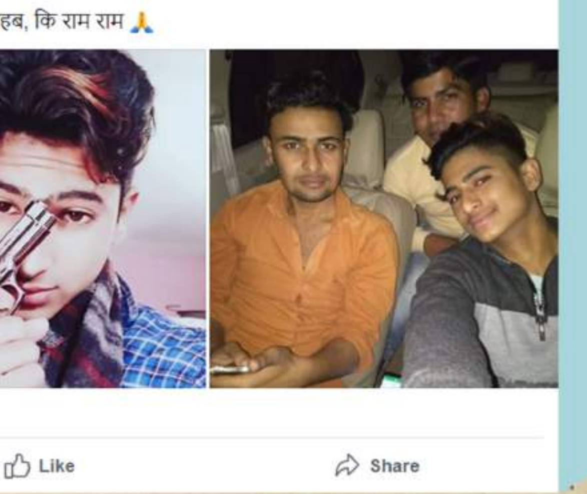

हब, कि राम राम 🙏

मना कर
कहती है.
चाची
कर आप ने अ
यह सिलसिल
धमकी से न ड
बता कर खुद
मैं 22 साल
व जीजा के
मकान में एक
हम तीनों एक
रात में नींद टूट
अच्छाभला

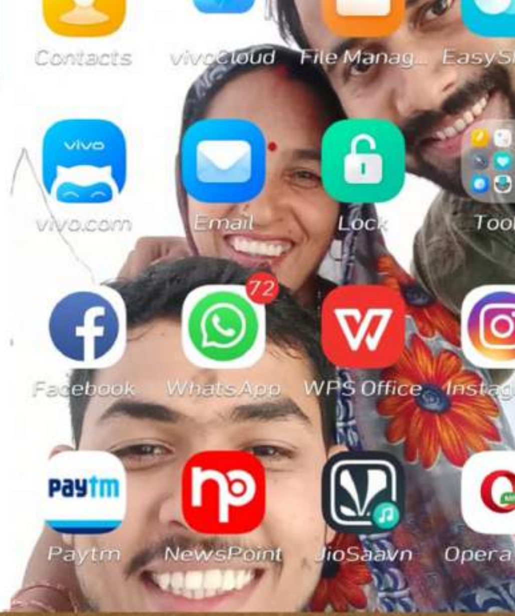

Contacts
vivoCloud
File Manag...
vivo.com
Email
Lock
Facebook
WhatsApp
72
WPS Office
Paytm
NewsPoint
JioSaavn
Opera

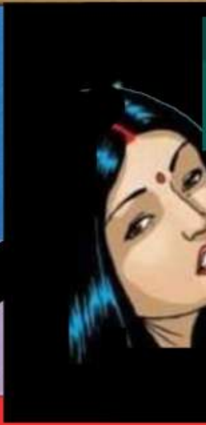

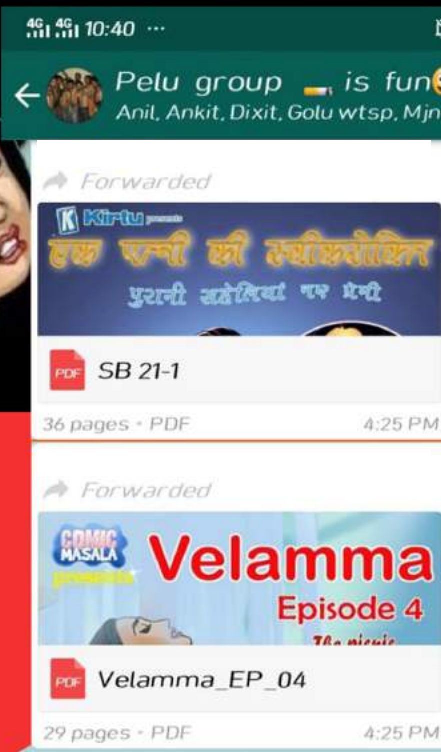

4G 4G 10:40 ···

Pelu group is fun

Anil, Ankit, Dixit, Golu wtsp, Mjn

Forwarded

Kirtu presents
एक पत्नी की स्वीकारोक्ति
पुरानी सहेलियां

SB 21-1

36 pages · PDF 4:25 PM

Forwarded

COMIC MASALA presents
Velamma
Episode 4

Velamma_EP_04

29 pages · PDF 4:25 PM

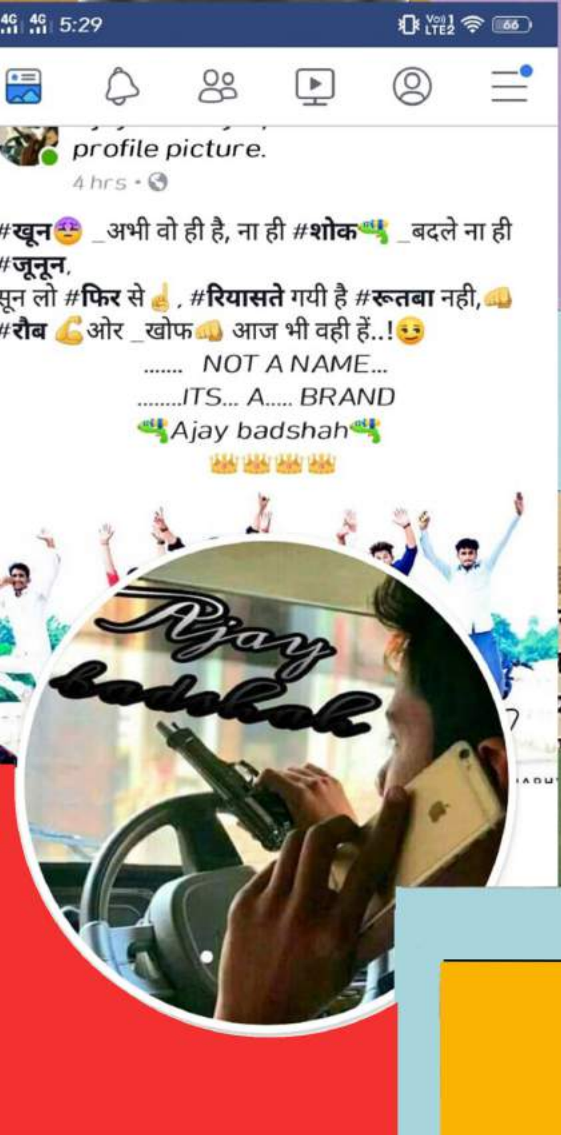

4G 4G 5:29

profile picture.

4 hrs ·

#खून😇 _अभी वो ही है, ना ही #शोक🔫 _बदले ना ही #जूनून,
सून लो #फिर से☝, #रियासते गयी है #रूतबा नही,👊
#रौब 💪ओर _खोफ👊 आज भी वही हें..!😉

.... NOT A NAME...

........ITS... A..... BRAND

🔫Ajay badshah🔫

👑👑👑👑

Ajay badshah

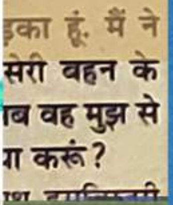

ड़का हूं. मैं ने
सेरी बहन के
ब वह मुझ से
ा करूं?

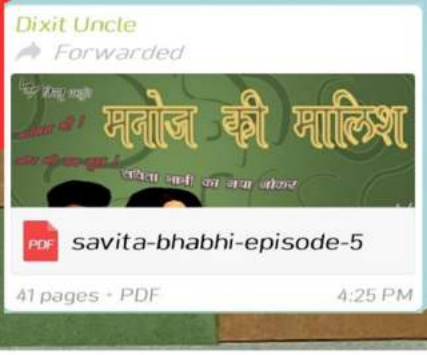

Dixit Uncle

Forwarded

savita-bhabhi-episode-5

41 pages · PDF 4:25 PM

namaskar
Welcom

मर्दानगी के भाव और सोशल मीडिया

- विषमलैंगिक यौनिकताओं से अलग, दूसरी यौनिकताओं वाले उत्तरदातों नें बार-बार यह बताया कि सोशल मीडिया के कारण किस तरह से वे खुद को संगठित करने और एक दूसरे के समर्थन कर पाने में सफल रहे थे। सोशल मीडिया के कारण ही इस समुदाय के अनेक लोग अपने लिए साथी खोज पाने में सफल रहे थे। इस से तो ऐसा प्रतीत होता है कि सोशल मीडिया की मौजूदगी इन उत्तरदाताओं के लिए सशक्त होने का माध्यम बन गयी थी।

- सोशल मीडिया पर युवा पुरुषों को अपनी सामाजिक पहचान बनाने के लिए अनेक यत्न करने होते हैं। उत्तरदाताओं नें बताया कि ऑनलाइन परिवेश में, विशेषकर किशोरावस्था के आरंभिक वर्षों में, प्रचलित जेंडर और अभिव्यक्ति के तरीकों के अनुरूप बने रहने का उनपर बहुत अधिक दबाब बना रहता है।

- यह जानकारी भी मिली कि उत्तरदाता ऑनलाइन प्लैटफ़ार्म पर खुद को दिखाने के लिए मर्दानगी की जाति-विशेष विशेषताओं का प्रयोग करते हैं। ऐसा लगता है कि फेसबुक और व्हाट्सऐप में जाति आधार बने समूहों में भागीदारी के कारण अनेक युवा पुरुषों के मन में जाति को लेकर सजगता बढ़ी है (फिर चाहे यह अंजाने में ही हुई हो)।

- हमारे इस नमूना सर्वेक्षण में अनेक ऐसे पुरुष भी थे तो सोशल मीडिया से मिलने वाली जानकारी की जांच किए बगैर ही उसे सच मान लेते थे और अपनाते भी थे। अपने हमउम्र लोगों में अपने प्रभाव या मर्दानगी की छवि को बनाए रखने के लिए लोगों के साथ व्यवहार में वे अक्सर इस असत्यापित जानकारी का प्रयोग भी करते थे।

- बहुत से उत्तरदाताओं नें यह भी बताया कि सोशल मीडिया में इस तरह के विचारों को भी बहुत ज़्यादा महत्व दिया जाता है जो किसी खास तरह के पुरुषों और उनकी मर्दानगी को नीचा करके देखते हैं। बहुत से लोगों के समूहों को दूसरे दर्जे के नागरिक, या ‘देश की सुरक्षा के लिए खतरा’ करार दिया जाता है या फिर उन्हें ‘देशद्रोही’ कहकर भी पुकारा जाने लगता है।

- उत्तरदाताओं द्वारा बताई गयी बातों से यह भी पता चला कि सोशल मीडिया में अपने को अधिक तेज़ और हिंसा के लिए हमेशा तैयार रहने वाला दिखाने के लिए लोग यौन हिंसा के विडियो भी साझा करते हैं जिनमें कहीं भी सहमति दिखाई नहीं देती। इस तरह की यौन हिंसा को दिखाना शायद से उन लोगों के साथ बदला लेने जैसा भी प्रतीत होता है जिन्हें पुरुषों के वर्ग में मर्दानगी में कहीं कम समझा जाता है। इस तरह से यौन हिंसा दर्शाने वाले इन विडियो को रेकॉर्ड करते समय, ये युवा कहीं न कहीं ये दर्शाना चाहते हैं किस किस तरह से उनका समुदाय / परिवार महिला यौनिकता को नियंत्रित कर पाता है और कैसे वे इसपर गर्व करते हैं।

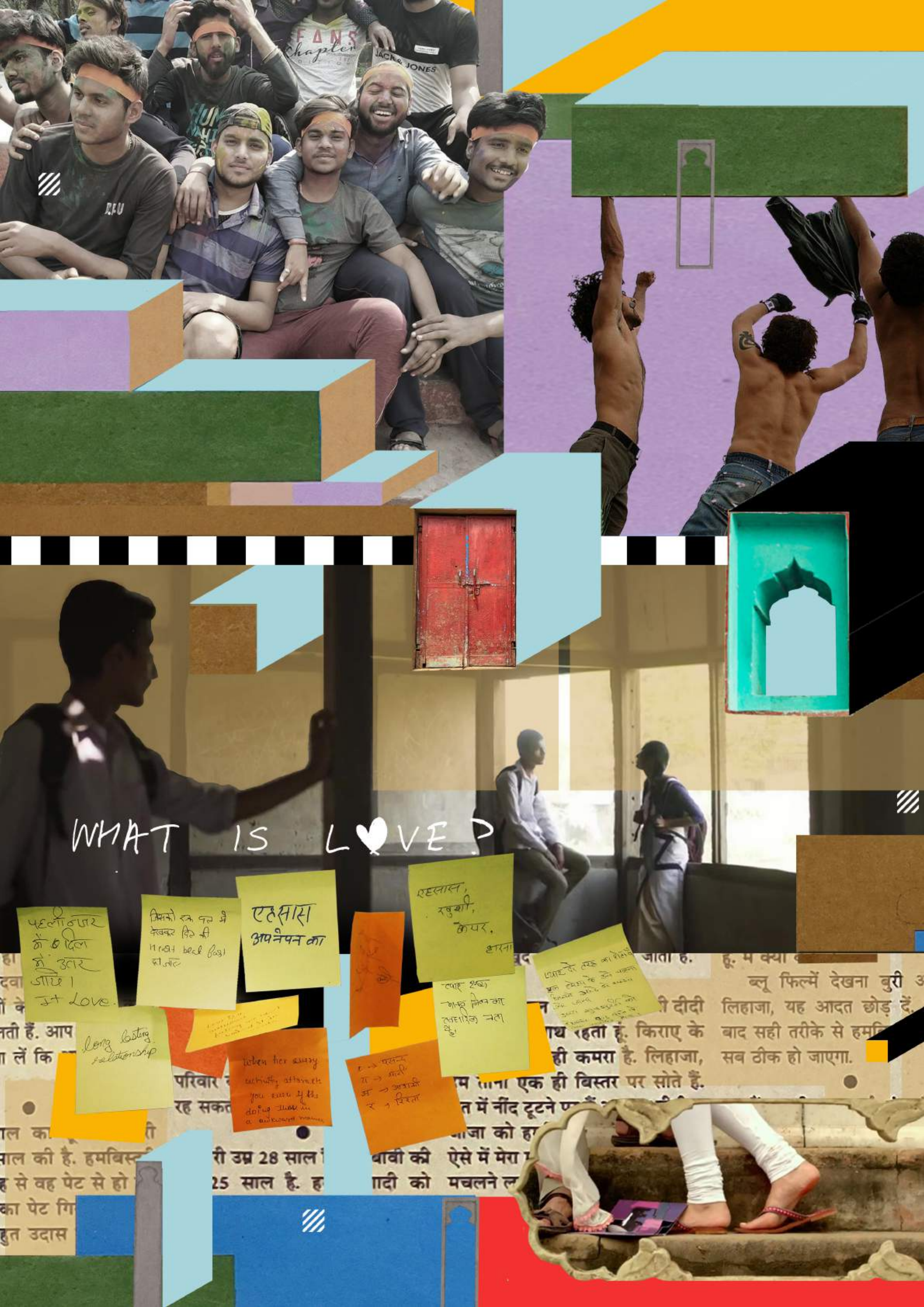
FANS Chapter
JACK & JONES
WHAT IS L♥VE?
पहली नजर में दिल में उतर जाये। It Love.
जिसको एक पल मै देखकर दिल की Heart beat fast हो जाए
एहसास अपनेपन का
एहसास, खुशी, केयर, भावना
long lasting relationship
When her every activity attracts you even if she doing those in a awkward manner
प → पसन्द
य → यारी
आ → आशामी
र → रिश्ता
जाती है.
ब्लू फिल्में देखना बुरी
लिहाजा, यह आदत छोड़ दें.
बाद सही तरीके से हम
सब ठीक हो जाएगा.
दीदी
साथ रहता हूं. किराए के
ही कमरा है. लिहाजा,
तीनों एक ही बिस्तर पर सोते हैं.
त में नींद टूटने
जा को
ऐसे में मेरा
मचलने
नती हैं. आप
लें कि
परिवार
रह सकत
साल की है. हमबिस्त
री उम्र 28 साल
25 साल है.
शादी को
से वह पेट से हो
का पेट गि
हुत उदास

पुरुषों के नेटवर्क, रोमांस और ‘योग्य पत्नी’

- कार्यक्रमों में उपलब्ध मौजूदा जानकारी के विपरीत, उत्तरदाताओं नें यह बताया कि दोस्ती उनके जीवन में अधिक महत्व रखती है। ऐसा पता चला कि दूसरे पुरुषों के साथ दोस्ती, उन लोगों के जीवन में जानकारी और समर्थन का बेहतर स्रोत रही थी, खासकर तब जब वे बहुत ज़्यादा अंदरूनी उथल-पुथल के दौर से गुज़र रहे थे। उनसे मिली यह जानकारी उस प्रचलित विचार से अलग थी कि पुरुष अक्सर अपने संगी-साथियों के बीच अपने मन की बात साझा नहीं करते हैं।

- इस विश्लेषण से यह तो सिद्ध हो गया था कि दोस्ती, मित्रता और संबंध बनाने में जातिगत सम्बन्धों की बड़ी भूमिका रहती है। अपने रोज़मर्रा के जीवन में संसाधनों के आबंटन और प्रयोग के जुड़े फैसले लेते समय उत्तरदाताओं के मन में जाति से जुड़े संबंध एक बड़ी भूमिका अदा करते हैं।

- एक गर्लफ्रेंड का होना, पुरुषों के लिए गर्व वाली बात होती है और गर्ल फ्रेंड वाले व्यक्ति का रुतबा दूसरे लोगों में बढ़ जाता है। लेकिन ऐसे होने पर दूसरे उन लोगों पर भी अधिक दबाब बनने लगता है जिनकी कोई गर्ल फ्रेंड नहीं बन पाती या फिर जो रोमांटिक संबंध कायम नहीं कर पाते। पुरुषों में इस तरह दर्जे के ऊपर या नीचे होने में महिलाओं की भूमिका यही है कि उनके होने या फिर न होने से समाज में पुरुष का सामाजिक स्तर प्रभावित होता है।

- उत्तरदाताओं नें बताया कि संबंध बनने से जानकारी का स्तर और अनुभव भी बढ़ते हैं। उन्होने प्रेम संबंध रखने से होने वाले दबाब के बारे में भी बताया: जैसे कि उन्हे अपनी गर्ल फ्रेंड के ‘खर्चे उठाने पड़ते हैं’, या फिर समय-समय पर उसे ‘बाहर घुमाने ले जाना पड़ता है’।

- कुछ पुरुषों नें बताया कि किस तरह उन्होने प्रेम में धोखा खाया था और अब इसलिए वे प्रेम के चक्कर में नहीं पड़ते। अब उन्होने किस तरह का धोखा खाया, इसके बारे में कोई बिलकुल साफ जानकारी नहीं मिली। हो सकता है कि अपनी मर्दानगी पर सवाल उठाए जाने या फिर आदर में कमी को पुरुष धोखा मानते हों: उनके प्रेम को ठुकरा दिये जाने पर उन्हे लगता है मानो उनसे उनका कोई अधिकार छीना जा रहा हो, और उनकी प्रेमिका या फिर उनके द्वारा किए गए किसी काम से इसका बहुत ज़्यादा ताल्लुक नहीं होता।

- एक खास तरह के उत्तरदाताओं नें बताया कि प्रेम और विवाह के बारे में उनके फैसले कानून और व्यवस्था के चलते भी प्रभावित होते हैं। हाशिये पद की गयी जाति या श्रमिक वर्ग के उत्तरदाताओं नें बताया कि वे विवाह करने से इसलिए कतराते हैं क्योंकि उन्हें यह डर लगता है कि कहीं महिला के परिवार के लोग, उनके प्रेम संबंध को खत्म करवाने के लिए उनके खिलाफ झूठी पुलिस शिकायत दर्ज न करवा दें।

- विश्लेषण से यह पता चलता है कि पुरुषों के मन में एक आदर्श पत्नी की छवि, समाज में उनके अपने स्तर और अपने व्यवहार के अनुरूप होती है, जबकि एक आदर्श या अच्छी गर्ल फ्रेंड में बिलकुल अलग तरह के गुणों की तलाश करते हैं। वे आगे चलकर किस लड़की से विवाह करना चाहेंगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे कितना अधिक अपनी पत्नी को अपने नियंत्रण में रख पाने में सफल रहेंगे। पुरुषों नें बताया कि, अपने से 'ऊंचे स्तर' की लड़की से विवाह करने वे पत्नी पर ज़्यादा नियंत्रण नहीं रख सकते और ऐसा होने से उनकी मर्दानगी को ठेस पहुँचती है। लेकिन प्रेम संबंध बनाने में ऐसा नहीं होता। प्रेम सम्बन्धों में अपने से ऊंचे स्तर की प्रेमिका पा लेना पुरुषों को अपने सामाजिक रुतबे में बढ़ोतरी होने जैसा लगता है और इससे उनका आत्म-विश्वास भी बढ़ता है।

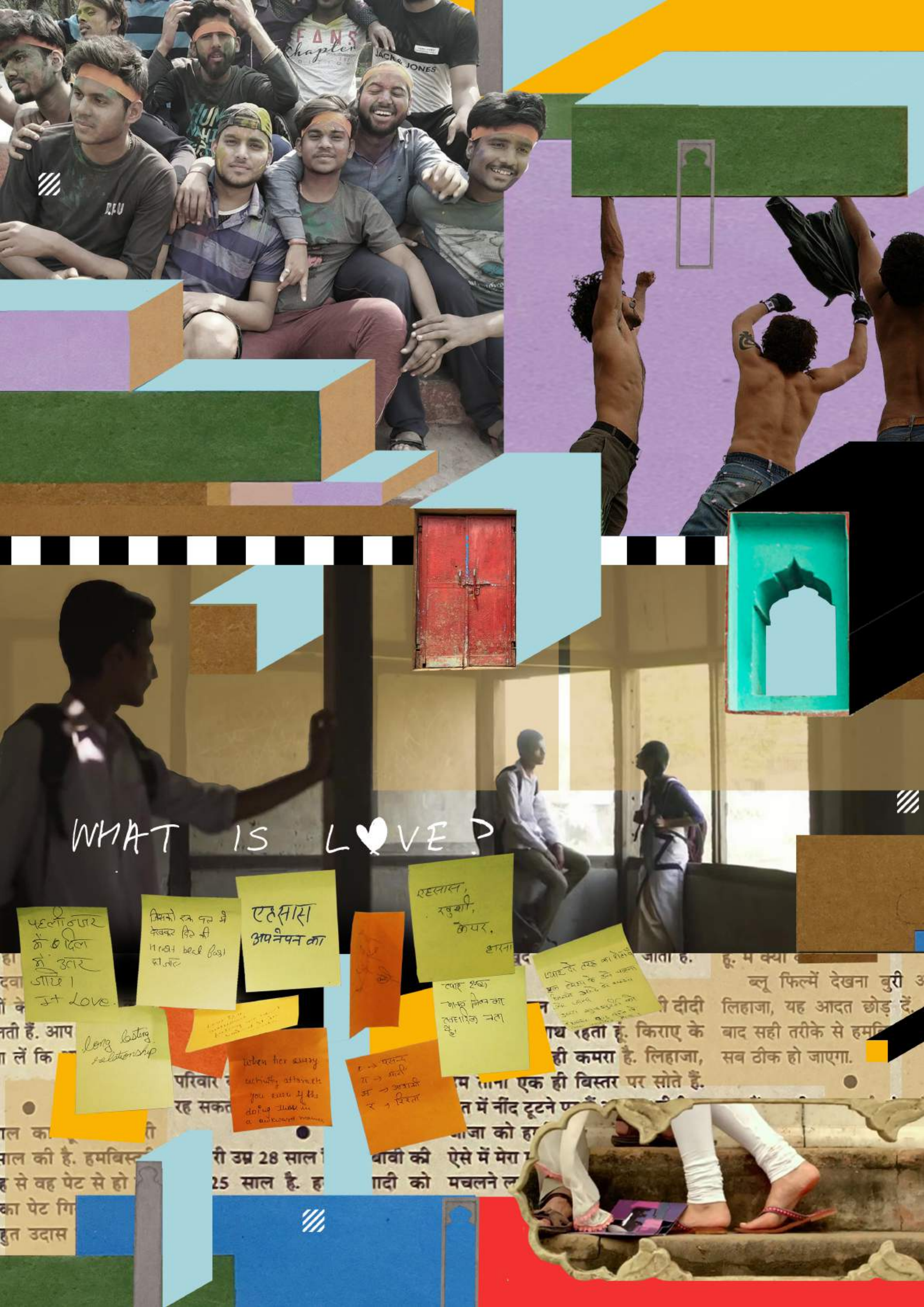
WHAT IS L♥VE ?
पहली नजर में दिल में उतर जाये। It Love.
जिसको एक पल में देखकर दिल की Heart beat fast हो जाए
एहसास अपनेपन का
एहसास, खुशी, केयर, भावना
long lasting relationship
When her every activity attracts you even if she doing those in a awkward manner
प → पसन्द
य → यारी
अ → आशिकी
र → रिश्ता
ब्लू फिल्में देखना बुरी
लिहाजा, यह आदत छोड़ दें.
बाद सही तरीके से हम
सब ठीक हो जाएगा.
एक ही बिस्तर पर सोते हैं.
ही कमरा है. लिहाजा,
में नींद टूटने
ऐसे में मेरा
मचलने
उम्र 28 साल
25 साल है.
का पेट
बहुत उदास
FANS Chapter
JACK & JONES

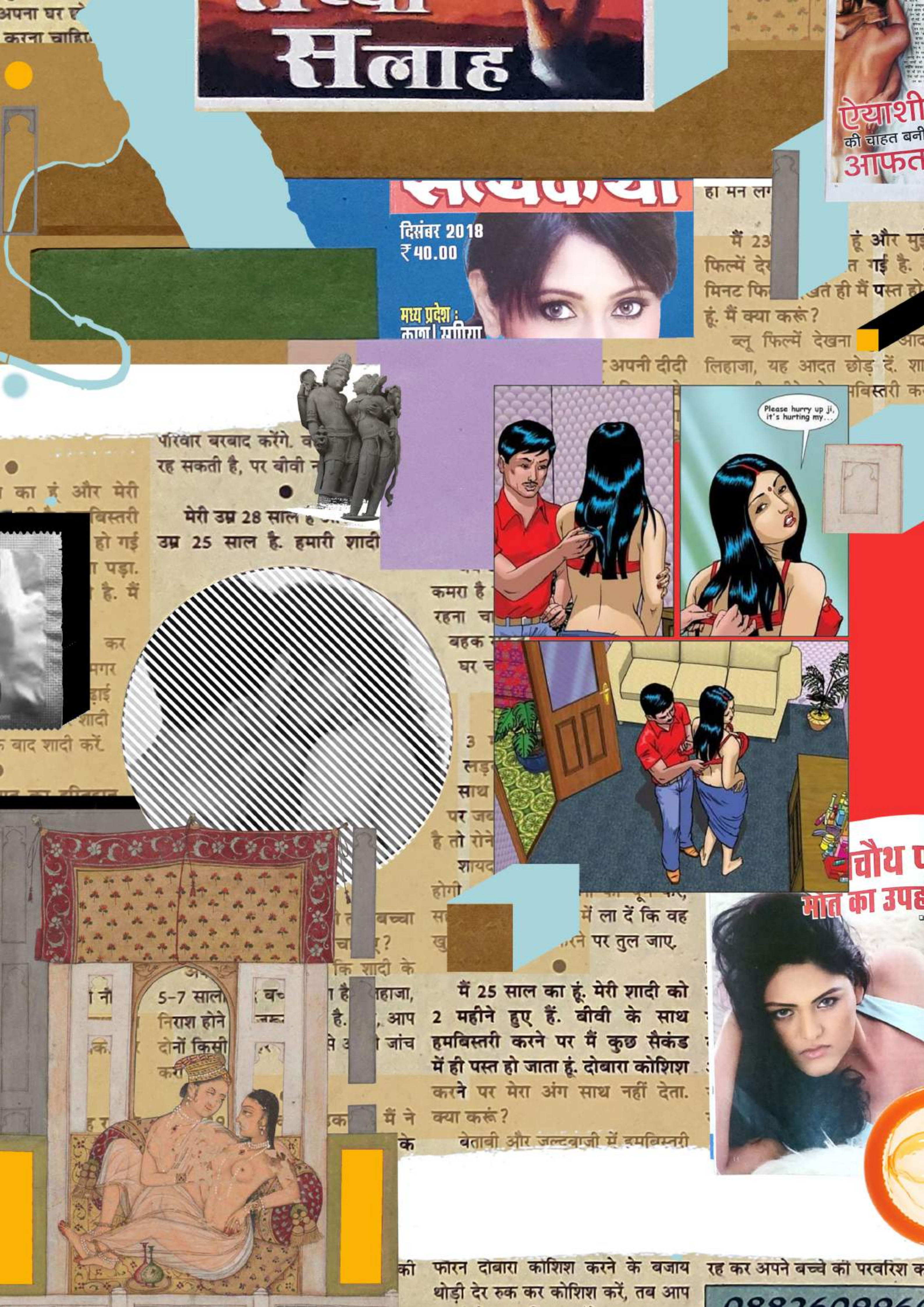
सलाह
दिसंबर 2018
₹40.00
मध्य प्रदेश :
ऐयाशी
की चाहत बनी
आफत
Please hurry up ji, it's hurting my...
चौथ
मौत का उप

अपना घर

करना चाहि

हा मन लग

मैं 23 हूं और मु

फिल्में दे त गई है.

मिनट फि ते ही मैं पस्त हो

हूं. मैं क्या करूं?

ब्लू फिल्में देखना आद

अपनी दीदी लिहाजा, यह आदत छोड़ दें. शा

बिस्तरी क

परिवार बरबाद करेंगे. व

रह सकती है, पर बीवी न

का हूं और मेरी

बिस्तरी

हो गई

पड़ा.

है. मैं

मेरी उम्र 28 साल है

उम्र 25 साल है. हमारी शादी

कर

मगर

ढ़ाई

शादी

बाद शादी करें.

कमरा है

रहना चा

बहक

घर च

3

लड़

साथ

पर जब

है तो रोने

शायद

होगी

बच्चा

स में ला दें कि वह

चा ?

खु रने पर तुल जाए.

कि शादी के

5-7 साल

निराश होने

दोनों किसी

करी

है लिहाजा,

है. आप

जांच

मैं ने

के

मैं 25 साल का हूं. मेरी शादी को 2 महीने हुए हैं. बीवी के साथ हमबिस्तरी करने पर मैं कुछ सैकंड में ही पस्त हो जाता हूं. दोबारा कोशिश करने पर मेरा अंग साथ नहीं देता. क्या करूं?

बेताबी और जल्दबाजी में हमबिस्तरी

की फौरन दोबारा कोशिश करने के बजाय थोड़ी देर रुक कर कोशिश करें, तब आप

रह कर अपने बच्चे की परवरिश क

यौन व्यवहार, सुरक्षित सेक्स और सहमति

- उत्तरदाता पुरूषों द्वारा बताई गई बातों से पता चला कि इनके यौन व्यवहार और सेक्स के बारे में इनके विचार हमेशा ही विषमलैंगिक यौन व्यवहारों के अनुरूप नहीं थे। इस जानकारी से यह विचार भी पुख्ता हो जाता है कि पुरूषों के यौन व्यवहारों और उनकी यौनिक पहचान के बीच कुछ बहुत ज़्यादा संबंध नहीं था। ऐसे में आवश्यकता है उन परिस्थितियों को समझने की जिनकी वजह से लोगों की यौनिक पहचान के विपरीत उनके यौन व्यवहारों को स्वीकृति मिल पाती है या फिर ये व्यवहार पनपते हैं। इसलिए कार्यक्रम बनाते समय और इन्हे लागू करते समय लाभार्थियों की पहचान केवल 'यौनिक पहचान' जैसी श्रेणी के आधार पर न करते हुए पूरे युवा वर्ग के साथ, उनकी सम्पूर्ण यौनिकताओं को साथ लेकर काम करने के प्रयास किए जाएँ ताकि सुरक्षित और सहमति पूर्ण यौन व्यवहारों को अपनाए जाने को सुनिश्चित किया जा सके।

- उत्तरदाता पुरूषों नें बताया कि किशोरावस्था में और फिर युवा आयु में सेक्स और यौनिकता के बारे में उन्हें जानकारी अनेक स्रोतों से मिलती रहती है। इनमें उनके बड़े चचेरे-मौसेरे भाई, स्कूल में पढ़ने वाले बड़ी उम्र के सहपाठी (खास कर बोर्डिंग स्कूलों और हॉस्टल आदि में) शामिल हैं। साथ ही सीडी/डीवीडी आदि की दुकाने भी इनमें शामिल हैं जहां से उन्हे स्थानीय स्तर पर तैयार हुए पोर्नोग्राफी के विडियो भी उपलब्ध हो पाते हैं।

- सुरक्षित सेक्स करने के बारे में उत्तरदाताओं के जवाब और उनके विचार, केवल सेक्स कर पाने की गोपनियता तक ही सीमित दिखाई दिये। इस विचार का सीधा संबंध लोगों के बीच उनकी 'अच्छा सीधा लड़का' होने की छवि से जुड़ा प्रतीत होता है जो अपने परिवार के प्रति समर्पित है और केवल शिक्षा और रोजगार के माध्यम से समाज में इज्ज़त, रुतबा और अधिकार पाने का इच्छुक है। पुरुष इन सामाजिक नियमों का कड़ाई से पालन करने और इन्हें अक्षुण्ण बनाए रखने के प्रति बहुत अधिक सजग दिखाई देते हैं।

- ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेम सम्बन्धों में साथी पर दबदबा बनाए रखने की सौदेबाजी पुरुष लोग बहुत हद तक सफलतापूर्वक प्राप्त कर लेते हैं। पुरुष अपने प्रेम सम्बन्धों को तब तक बनाए रखने में विश्वास रखते हैं जब तक कि उनकी प्रेमिका केवल उनसे प्रेम करती रहे, वो इतनी सुंदर हो कि उसे देखकर उनके दूसरे दोस्त उनसे ईर्ष्या करने लगें और जो उनकी बातों और मांगों को पूरा करती रहे। जब तक वह प्रेमिका इन सभी शर्तों पर खरी उतरती है, प्रेम संबंध जारी रहता है और ज्यों ही वह संबंध जारी न रखने की इच्छा पर अमल करना शुरु करती है, तब उसकी इस हरकत को प्यार में धोखा करार देते हुए इस संबंध को खत्म कर दिया जाता है।

- वैवाहिक सम्बन्धों में पुरुष अपनी इच्छा से कुछ भी करने का विचार मन में रखते हैं। सामाजिक विकास की प्रक्रिया में ही पुरुषों को यह विश्वास

हो जाता है कि उन्हे एक ऐसी ‘आदर्श पत्नी पाने का पूरा अधिकार है जो न केवल उनके घर परिवार को संभाले, बल्कि उनकी, उनके बच्चों और उनके माता-पिता की सब इच्छाओं को भी पूरा करे’। विवाह को पति की इच्छा होने पर किसी भी समय सेक्स कर लेने के ‘लाइसेन्स’ के रूप में देखा जाता है,फिर भले ही उसमें पत्नी की इच्छा अथवा सहमति हो या नहीं।

- अनेक उत्तरदाता ऐसा नहीं मानते थे कि यौन सम्बन्धों में सहमति का होना कोई महत्व रखता है; यहाँ समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि सेक्स के लिए ‘न’ कहने वाली महिला के प्रति पुरुषों की प्रतिक्रिया उस महिला की सामाजिक पहचान पर आधारित होती है । ऐसे मामलों में सहमति का कोई अधिक महत्व रह नहीं जाता और मना कर दिये जाने पर पुरुष के मन में ठुकराये जाने का भाव उत्पन्न होता है और इसकी प्रतिक्रिया के रूप में पुरुष की ओर से अधिक उग्रता, गाली गलौच, शारीरिक और मानसिक हिंसा देखने को मिलती है।

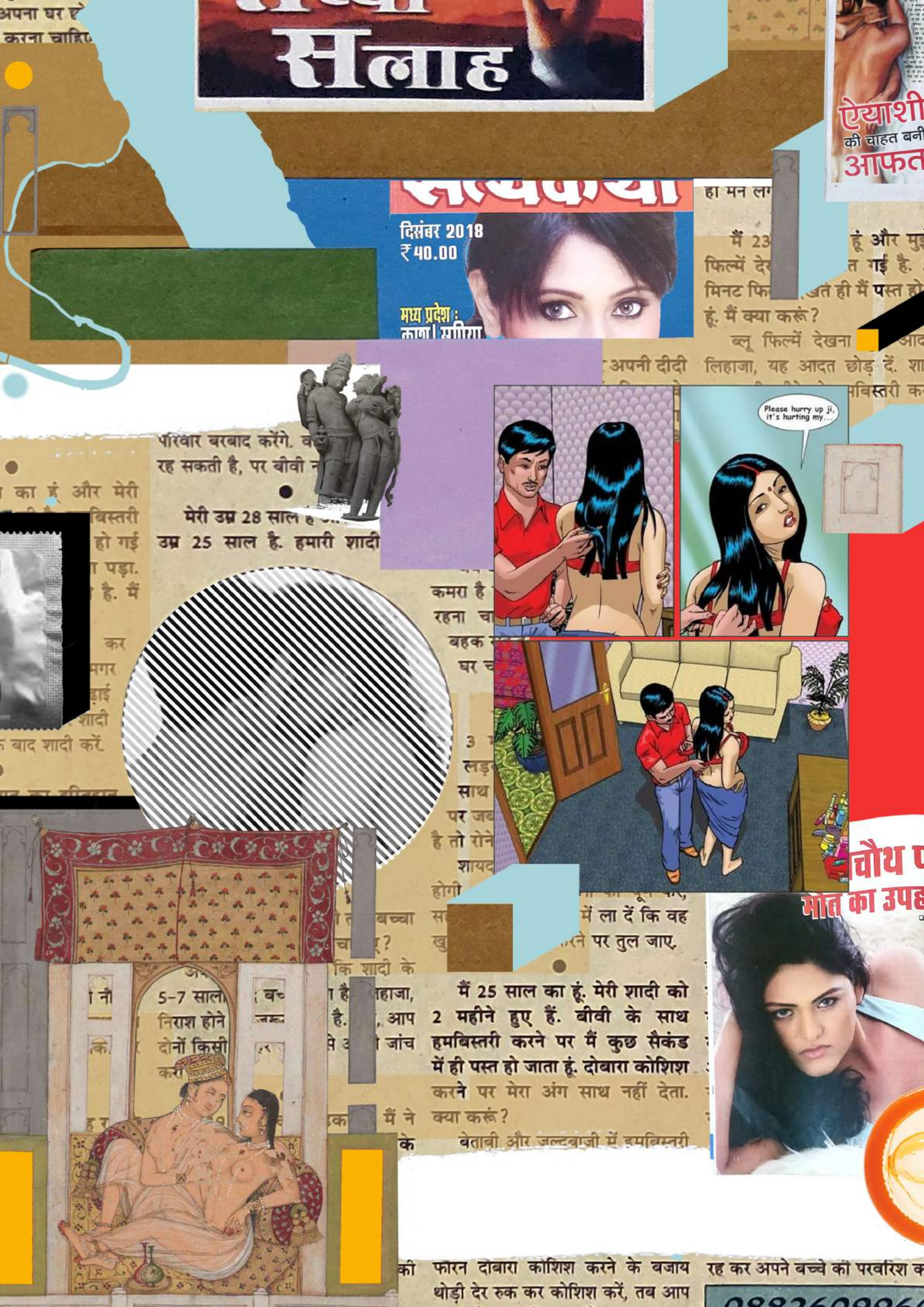

अपना घर ह
करना चाहिए
सलाह
दिसंबर 2018
₹40.00
मध्य प्रदेश :
ऐयाशी
की चाहत बनी
आफत
Please hurry up ji, it's hurting my...
चौथ प
मौत का उपह

हा मन लग

मैं 23 हूं और मु
फिल्में दे त गई है.
मिनट फि त ही मैं पस्त हो
हूं. मैं क्या करूं?

ब्लू फिल्में देखना आद
लिहाजा, यह आदत छोड़ दें. शा
मबिस्तरी क

अपनी दीदी

का हूं और मेरी
बिस्तरी
हो गई
पड़ा.
है. मैं
कर
मगर
ढ़ाई
शादी
क बाद शादी करें.

परिवार बरबाद करेंगे. व
रह सकती है, पर बीवी न

मेरी उम्र 28 साल ह
उम्र 25 साल है. हमारी शादी

कमरा है
रहना चा
बहक
घर च

3
लड़
साथ
पर ज
है तो रोने
शायद
होगी
स में ला दें कि वह
खु रने पर तुल जाए.

त बच्चा
चा ?
कि शादी के
नौ
5-7 साल
निराश होने
दोनों किसी
करी
है लिहाजा,
है. , आप
से अ जांच
क मैं ने
के
की

मैं 25 साल का हूं. मेरी शादी को 2 महीने हुए हैं. बीवी के साथ हमबिस्तरी करने पर मैं कुछ सैकंड में ही पस्त हो जाता हूं. दोबारा कोशिश करने पर मेरा अंग साथ नहीं देता. क्या करूं?

बेताबी और जल्दबाजी में हमबिस्तरी
फौरन दोबारा कोशिश करने के बजाय थोड़ी देर रुक कर कोशिश करें, तब आप

रह कर अपने बच्चे की परवरिश क

हिंसा और मर्दानगी

- पुरूषों द्वारा बताई गयी बातों से पता चलता है कि पुरूषोचित व्यवहारों, व्यक्तित्व और आदर्श जेंडर पहचानों के इर्द-गिर्द बनी मान्यताओं से, पुरूषों को अपने रोज़मर्रा के जीवन में हिंसा कर पाने का मानों अधिकार ही मिल जाता है। पुरूषों द्वारा आमतौर पर महिलाओं पर, खासकर घर की महिलाओं पर हावी होने और दबदबा बनाए रखने के लिए या फिर किसी दूसरे पुरुष/समुदाय या परिवार को नीचा दिखाने के लिए महिलाओं के प्रति हिंसक हो उठने को सामान्य व्यवहार मान लिया जाता है।

- हमारे पुरुष उत्तरदाताओं नें यह भी बताया कि सार्वजनिक स्थानों पर पुरूषों द्वारा हिंसा का प्रदर्शन, अपने अधिकारों को सुरक्षित रखने और मर्दानगी या पौरूष की श्रेष्ठता को बनाए रखने के भाव से किया जाता है। यह दुसरे पुरूषो और महिलाओ दोनों के खिलाफ होने वाले हिंसा के लिए सच है, लेकिन महिलाओं के सन्दर्भ में यह हिंसा अधिक रूप से व्यक्त होती और दिखती है। किसी सार्वजनिक स्थान पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा दरअसल 'ठुकरा' दिये जाने या मना कर दिये जाने पर अपमानित होने के भाव से उत्पन्न होती है और हिंसा करके वे समाज में 'मर्दों के रुतबे को सही स्थान' दिलाने की कोशिश करते हैं।

- फोकस्ड ग्रुप में हुई चर्चा के बाद तो यह स्पष्ट हो गया था कि जेंडर आधारित हिंसा के मामलों में हो रही लगातार बढ़ौतरी के कारण हिंसा की इस प्रवृति को रोकने के उद्देश्य से कार्यक्रमों की कार्य योजनाओं में भी अब हिंसा करने के पौरुष भाव को शामिल किया जाने लगा है। हिंसा की रोकथाम पर काम कर रहे कई जमीनी स्तर के संगठनों ने अब पुरूषों को 'समझाने' और और भविष्य की घटनाओं को रोकने के लिए हिंसा को ही एक रणनीति के रूप में अपनाया है।

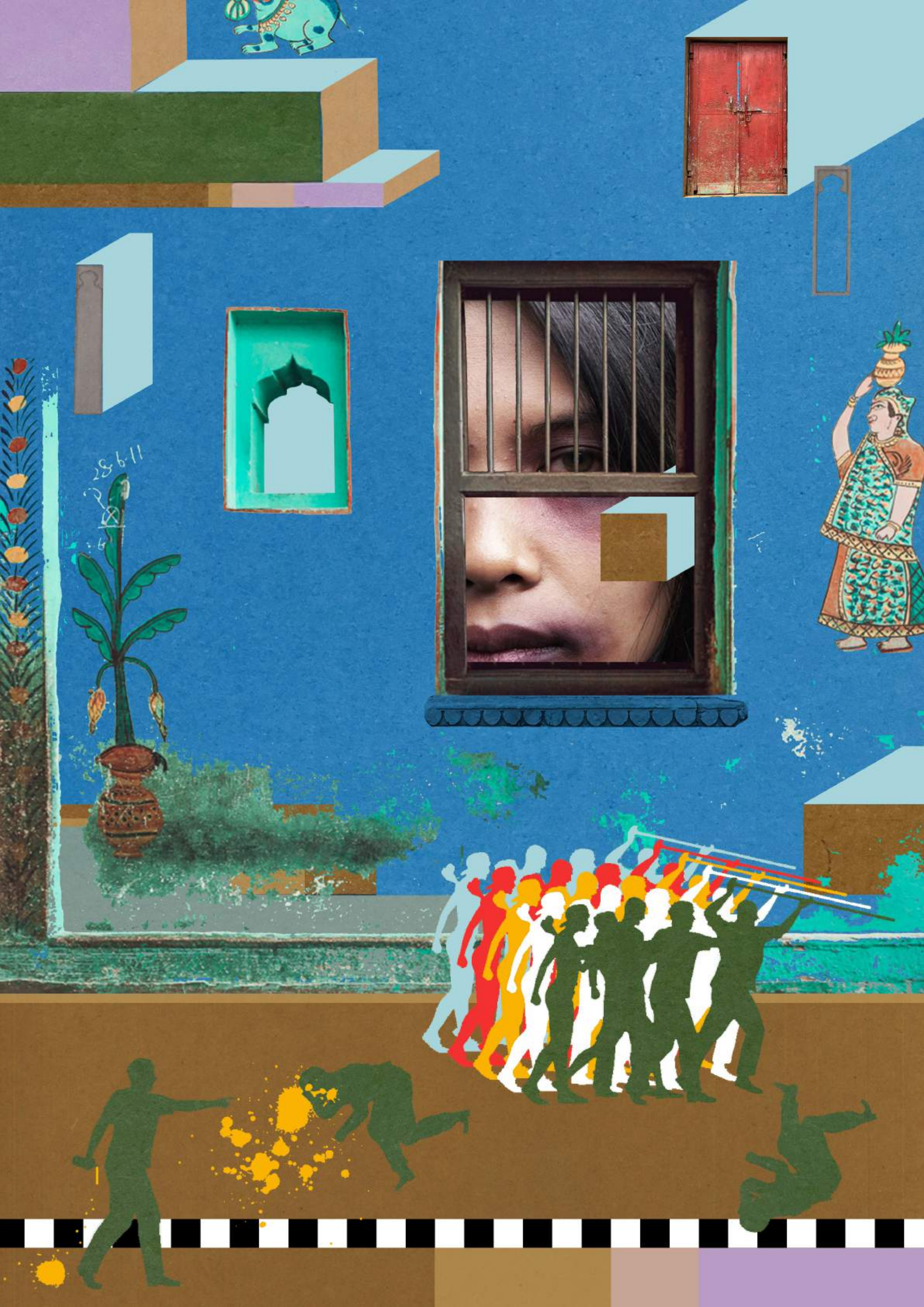
28 6·11

the yp foundation
INTERSECTIONAL | FEMINIST | RIGHTS-BASED

/ theypfoundation

TYPF की वैबसाइट - theypfoundation.org

द वाईपी फाउंडेशन (टीवाईपीएफ) एक युवा विकास संस्था है जो स्वास्थ्य समानता, जेंडर न्याय, यौनिक अधिकारों और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर युवा लोगों के नारीवादी और अधिकार-आधारित नेतृत्व को बनाता और बढ़ाता है। TYPF सुनिश्चित करता है कि युवाओं के पास उनके जीवन को प्रभावित करने वाले कार्यक्रमों और नीतियों के विकास और कार्यान्वयन को सूचित करने और नेतृत्व करने के लिए जानकारी, क्षमता और अवसर हों, और उन्हें सामाजिक परिवर्तन के कुशल और जागरूक नेताओं के रूप में पहचाना जाए।

मर्दों वाली बात कार्यक्रम पुरूषों और लड़कों के साथ काम करता है ताकि जेंडर से जुड़े पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देने और जेंडर आधारित हिंसा को रोकने के लिए मर्दानगी पर गहराई से सोच बनाई जा सकें। अनुसंधान और हस्तक्षेप डिजाइनों के माध्यम से, कार्यक्रम युवा पुरूषों और लड़कों के लिए उनके विशेषाधिकारों और कमजोरियों की पारस्परिक प्रकृति पर संवाद करने के लिए इंटरैक्टिव जगह बनाना चाहता है।

शोध व लेखन कार्य : **अभिषेक सेखरन**
आंकड़े संग्रहण व फील्डवर्क : **अभिषेक सेखरन, अनुज गोपाल दुबे**
चित्रण व डिज़ाइन : **अक्षय शेट्टी, शैल बज़रि**
सम्पादन व समीक्षा : **एस्थर मोरेस, आनंद पवार, मानक मटियानी**

निर्माण : **द अमेरीकन ज्यूईश वर्ल्ड सर्विस (AJWS) के सहयोग से द वाईपी फ़ाउंडेशन**